संवाद पत्र

पूर्वोत्तर सीमा रेल
निर्माण संगठन

अंक 39 | वर्ष : नवम | त्रैमासिक | जुलाई , 2016

स्वतंत्रता दिवस समारोह - 2016

इस वर्ष पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण द्वारा स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। एक रंगारंग कार्यक्रम के अंतर्गत महाप्रबंधक/निर्माण श्री एच.के.जग्गी ने ध्वजारोहन किया। इस समारोह में अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजन काफी संख्या में उपस्थित हुए।

कुमारघाट- अगरतला सेक्शन

कुमारघाट- अगरतला सेक्शन की गति क्षमता 100 किमी. प्रति घंटा है । इस सेक्शन में 6 पारगमन स्टेशन और 4 हॉल्ट स्टेशन हैं। सेक्शन में 15 बड़े पुल और 183 छोटे पुल हैं । इसमें 6 समपार,13 सड़क ऊपरी और 14 सड़क निचले पुल हैं । अगरतला में पहली बड़ी लाइन परीक्षण गाड़ी 13 जनवरी, 2016 को पहुँची तथा पूरे बदरपुर-कुमारघाट-अगरतला लाइन पर मालगाड़ी चलाने की स्वीकृति 20 फरवरी 2016 को प्राप्त हुई ।

धनसिरी (डिमापुर)- जुब्जा नई बी.जी. लाइन का शिलान्यास

माननीय रेलमंत्री, श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु ने दिनांक 01.08.2016 को डिमापुर रेलवे स्टेशन में महामहिम राज्यपाल श्री पी.बी. आचार्या, नागालैंड, श्री टी.आर.जेलियांग, माननीय मुख्यमंत्री नागालैंड,माननीय रेल राज्यमंत्री श्री राजेन गोहाई, श्री एच. के.जग्गी, महाप्रबंधक/निर्माण, श्री के.जी. केन्ये, माननीय सांसद राज्यसभा, श्री नेफिउ रिओ, माननीय सांसद लोकसभा, श्री टोवीहोटो एमी माननीय विधायक, नागालैंड के भव्य उपस्थिति में धनसिरी (डिमापुर)- जुब्जा नई बीजी लाइन का शिलान्यास किया ।

त्रिपुरा में रेल संपर्क

बदरपुर से कुमारघाट (118 किमी) छोटी लाइन को लमडिंग बदरपुर-सिलचर आमान परिवर्तन परियोजनाओं के अंश के रुप में बड़ी लाइन में परिवर्तित की गई थी, जिसकी लागत लगभग 565 करोड़ रु. आई थी। कुमारघाट से अगरतला तक एक नयी बड़ी लाइन (109 कि.मी.) का निर्माण किया गया था, जिसकी अनुमानित लागत 1451 करोड़ रु. थी। अगरतला से सबरुम (112 कि.मी.) एक अन्य बड़ी लाइन का निर्माण किया जा रहा है, जिसकी अनुमानित लागत 3351 करोड़ रु.है, उसे राष्ट्रीय परियोजना के रुप में घोषित किया गया है ।

संरक्षक	मुख्य संपादक	संपादक	सहयोग
श्री एच. के. जग्गी	श्री अनिल कुमार	श्री अमन पुष्कर	श्रीमती रंजु झा
महाप्रबंधक/निर्माण	मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि.	उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि.	वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/नि.

अगरतला- अखौरा नयी बड़ी रेलवे लाइन

रेलवे बजट वर्ष 2012-13 में अगरतला से अखौरा (बांगलादेश में) नयी बड़ी रेलवे लाइन की निर्माण परियोजना स्वीकृत हुई थी। फलस्वरुप 16 फरवरी 2013 को भारत सरकार और बांगलादेश सरकार ने एक समझौता-पत्र पर हस्ताक्षर किया। प्रस्तावित अगरतला-अखौरा अंतर्राष्ट्रीय रेल संपर्क परियोजना त्रिपुरा राज्य तथा समूचे पूर्वोत्तर भारत क्षेत्र और पूरे राष्ट्र के सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देगी। इस परियोजना के तहत निर्धारित 15.0 कि.मी. लाइन में 5.05 कि.मी. भारत के त्रिपुरा में और 10.01 कि.मी. बांगलादेश में है। इस लाइन पर कुल 5 स्टेशन और 9 समपार होंगे। इस परियोजना में एक बड़े पुल सहित कुल 15 पुलों का निर्माण शामिल है। इसकी गति 100 कि.मी. प्रति घंटा होगी ।

यह लाइन ट्रांस एशियन रेलवे नेटवर्क का एक भाग होगा और त्रिपुरा से कोलकाता तक एक बहुत छोटा रेल संपर्क उपलब्ध कराएगी । यह भारत- बांगलादेश रेल संपर्क परियोजना पूरा होने पर समूचे पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए गेट-वे होगा । यह आशुगंज के साथ अगरतला (भारत) और बांगलादेश के चिट्टागंग पोर्ट को जोड़ेगी, जिसकी दूरी क्रमश: 54 कि.मी. और 213 कि.मी. होगी । यह अगरतला से ढाका के बरास्ते कोलकाता को जोड़ेगी और इसकी दूरी 514 कि.मी. होगी । मौजूदा समय में भारतीय रेलवे नेटवर्क पर अगरतला और कोलकाता के बीच की दूरी 1613 कि.मी. है । यह परियोजना त्रिपुरा राज्य, समूचे पूर्वोत्तर क्षेत्र और पूरे राष्ट्र के सामाजिक- आर्थिक विकास को बढावा देगी । परियोजना की कुल अनुमानित लागत 968 करोड़ रुपये है । रेलवे बजट 2015-16 में 148.4 करोड़ की राशि की स्वीकृति दी गयी है ।

मेसर्स इरकॉन को बांगलादेश के भाग के लिए तकनीकी सलाहकार के रुप में कार्य करने के लिए और भारतीय भाग में कार्य को निष्पादित करने के लिए नामित किया गया है ।

विशिष्टताएं

(1)	स्वीकृति वर्ष	:	2012-13
(2)	अनुमानित लागत	:	967.85 करोड़ रु.
(3)	लंबाई	:	15.064 किमी. (भारत- 5.05 किमी. बांगलादेश- 10.014 किमी.)
(4)	स्टेशन	:	05
(5)	समपार	:	09
(6)	बड़े पुल	:	01
(7)	छोटे पुल	:	14
(8)	मार्ग सेतु	:	3.31 किमी.
(9)	ढलान	:	1 इन 200
(10)	गति सीमा	:	100 किमी प्रति घंटा

अगरतला से नई दिल्ली (आनंद विहार) तक नई ट्रेन

स्थल रुद्ध राज्य त्रिपुरा के लोगों के लंबे अर्से से मांग को पूरा करने के उद्देश्य से अगरतला और नई दिल्ली (आनंद विहार) के बीच एक सीधी एक्सप्रेस ट्रेन सेवा शुरु की गई। 14019/14020 अगरतला-आनंद विहार त्रिपुरा सुंदरी एक्सप्रेस (साप्ताहिक) प्रत्येक गुरुवार को अपराह्न 02.00 बजे अगरतला से चलकर प्रत्येक शनिवार को अपराह्न 15.50 बजे आनंद विहार पहुँचेगी । वापसी यात्रा में प्रत्येक सोमवार को रात्रि 11.55 बजे आनंद विहार से चलकर प्रत्येक बुधवार को रात्रि 11.45 बजे अगरतला पहुँचेगी ।

इस एक्सप्रेस गाड़ी में एक एसी -2 टियर, तीन एसी-3 टियर, पॉच स्लीपर क्लास तथा सामान्य श्रेणी कोच होंगे। अंबासा, धर्मनगर, करीमगंज, बदरपुर,न्यू-हाफलॉग, होजाई लमडिंग जं, जागीरोड, गुवाहाटी, न्यू बंगाईगांव, बरौनी, पाटलीपुत्र,मुगलसराय, इलाहाबाद जं. और कानपुर रेलवे स्टेशनों में ट्रेन के ठहराव होंगे ।

इम्फाल रेलवे स्टेशन की आधारशिला

माननीय रेल-मंत्री श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु ने इम्फाल रेलवे स्टेशन की आधारशिला रखा। इम्फाल रेलवे स्टेशन मणिपुर में इम्फाल शहर के केन्द्र से करीब 13.00 कि.मी. की दूरी पर स्थित युरेमबाम गांव में है। इम्फाल हवाई अड्डे से इसकी दूरी करीब 1.50 कि.मी. है। स्टेशन भवन का वस्तुशिल्प मणिपुर के पुरातात्विक स्थल कांग्ला फोर्ट गेट और श्री गोविन्दजी मन्दिर के वस्तु शिल्पीय तत्वों के समावेश से योजनाबद्ध किया गया है । स्टेशन भवन का लागत खर्च लगभग 8.7 करोड़ रुपये होने की संभावना है । यह तीन पैसेंजर, प्लेटफॉर्म और कोच मेन्टेनेंस शेड सहित सभी सुविधाओं से युक्त रेलवे टर्मिनल स्टेशन होगा ।

जिरिबाम- तुपुल- इम्फाल नयी बड़ी लाइन परियोजना

पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को बड़ी रेलवे लाइन से जोड़ने के भारतीय रेलवे स्वीकृत लक्ष्य के मद्देनजर वर्ष 2008 में 111 कि.मी. लंबी जिरिबाम-तुपुल-इंफाल नई बड़ी लाइन रेलवे परियोजना शुरू की गई थी। बाद में इसके महत्व को देखते हुए इसे राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया। 12.3 कि.मी. जिरिबाम से धोलाखाल सेक्शन पूरा किया जा चुका है और मार्च, 2016 में मालगाड़ी के लिए शुरू किया जा चुका है।

84 कि.मी. के जिरिबाम-तुपुल सेक्शन की 37 सुरंगों में से 25 का कार्य 30 अप्रैल, 2016 तक पूरा किया जा चुका है तथा शेष जल्द ही पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इस परियोजना के अन्य सभी कार्य प्रगति पर हैं।

विशिष्टताएं

क्र.	मद	जिरिबाम-तुपुल	तुपुल-इम्फाल	कुल
1	लम्बाई	84 किमी	27 किमी	111 किमी
2	सुरंग	37	8	45
3	सुरगों की कुल लम्बाई	43 किमी	18.2 किमी	60.2किमी
4	बड़े पुल	16	6	22
5	छोटे पुल	102	40	142
6	स्टेशनों की संख्या	6	3	9
7	प्रमुख ढलान	1 इन 80	1 इन 80	
8	गति क्षमता/प्रति घंटा	100 किमी	100 किमी	
9	अनुमानित कीमत/ करोड़ लगभग	रु. 6525	रु.3132	रु.9657

जिरिबाम-इंफाल नई बड़ी रेल लाइन की दो आकर्षक विशिष्टताएं, जिस पर प्रत्येक भारतीय गौरवान्वित होगा, वे हैं पहली इरिंग नदी पर बन रहा 141 मीटर ऊंचा विश्व का सबसे ऊंचा पुल (लगभग 2 कुतुब मीनार के बराबर ऊंचा) और दूसरी 11.55 कि.मी. लंबाई के साथ सुरंग संख्या-12 भारत में सबसे लंबी रेलवे सुरंग होगी। ये कार्य स्टेट ऑफ आर्ट तकनीक से किए जाएंगे।

राजभाषा संपर्क अधिकारियों की बैठक का आयोजन

दिनांक 26.05.2016 को संपर्क अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने एवं कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से निर्माण संगठन के विभिन्न विभागों में राजभाषा संपर्क अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। पिछली तिमाही में संपर्क अधिकारियों के मार्गदर्शन में संबंधित विभागों में राजभाषा की प्रगति उल्लेखनीय रही, जिसमें सभी विभागों के नामित अधिकारी उपस्थित हुए।

धनसिरी (डिमापुर) - जुब्जा (कोहिमा) नयी बड़ी रेलवे लाइन

पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को रेल संपर्क उपलब्ध कराने के लिए भारतीय रेलवे के अंगीकार नीति का अनुसरण करते हुए रेलवे बोर्ड द्वारा वर्ष 2007-08 में 88 कि.मी.लम्बी डिमापुर से जुब्जा (कोहिमा) नयी बड़ी रेलवे लाइन की स्वीकृति दी गयी थी । बाद में धनसिरी से सुखोबी के बरास्ते जुब्जा तक इसे 90.50 किमी.लम्बी लाइन बनाने के लिए संरेखण का बदलाव किया गया । इसके महत्व को समझते हुए इसे वर्ष 2007 में राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया गया ।

नयी रेल लाइन डिमापुर से 19 कि.मी. पहले असम के कार्बी आंग्लांग जिले में धनसिरी रेलवे स्टेशन से शुरु होकर कोहिमा से 16 किमी. पहले जुब्जा पहुंचेगी । इस रेलवे लाइन के निर्माण से राजधानी कोहिमा भारतीय रेल के बड़ी लाइन के मानचित्र पर आ जाएगा । ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र होने के चलते कोहिमा के निकट जुब्जा के बाद बहुत खड़ी ढलान के कारण रेल लाइन जुब्जा में समाप्त कर दिया गया है । इस नयी लाइन पर गति 100 किमी. प्रति घंटे होगी और नागालैंड के डिमापुर और कोहिमा जिलों को संपर्क स्थापित करेगी ।

परियोजना की विशिष्टताएं

1.	लम्बाई	90.5 किमी.
2.	सुरंग	9
3.	सुरगों की कुल लम्बाई	21 किमी.
4.	ऊंचे पुलों की संख्या	5
5.	बड़े पुल	24
6.	छोटे पुल	89
7.	पुलों की कुल लम्बाई	4,438 किमी.
8.	नये स्टेशन	7
9.	प्रमुख ढलान	1 इन 80
10.	स्टेशनों की संख्या	8 (धनसिरी,धनसिरी पार, सुखोबी,मोलवोम,खैबंग, चेफेमा,रवाबवुमा एवं जुब्जा
11.	कुल भुमि की जरुरत	940.5 हेक्टेयर

वित्तीय विवरण

स्वीकृति का वर्ष	2007.2008
लम्बाई	90.5 किमी.
स्वीकृति लागत	रु.2315.30 करोड़
31-03-2016 तक खर्च	रु.145.45 करोड़
वित्त वर्ष 2016-17 के लिए राशि आवंटन	रु.350 करोड़
वर्ष 2016-17 के जून -16 तक खर्च	रु.2.6 करोड़

परियोजना तीन चरणों में निस्पादिन की जाएगी । पहले चरण में धनसिरी से सुखोबी (16 कि.मी.) सेक्शन, दूसरे चरण में सुखोबी से खैबंग (30 कि.मी.) सेक्शन है । परियोजना के प्रथम चरण को पूरा करने का लक्ष्य दिसम्बर, 2019 और पूरी परियोजना को पूरा करने का लक्ष्य मार्च, 2020 तक रखा गया है ।

वित्तीय निष्पादन (नई लाइन, आमान परिवर्तन एवं दोहरीकरण)

2015-16 में निष्पादन

- खर्च = 6,107,80 करोड़ रूपये

2016-17 के लिए परिव्यय

- मांग-16 रेलवे = 5,293.02 करोड़ रूपये
  डीईपी = 520.01 करोड़ रूपये
  कुल = 5,813.03 करोड़ रूपये

2016-17 में परिव्यय

- जुलाई, 16 के दौरान खर्च = 475.22 करोड़ रूपये
- जुलाई,16 तक संचयी खर्च = 1754.89 करोड़ रूपये

परिव्यय का खर्च (%) = 30.19 %

अनमोल वाणी

अच्छा कार्यकर्ता वही हो सकता है जो अनुशासनप्रिय होता है और स्वयं पर होने वाले अनुशासन को सहन कर सकता है।

- आचार्यश्री महाश्रमण

कृत्रिम सुख की बजाये ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

पदस्थापन/स्थानांतरण

श्री गोपाल चंद्र सरकार, उप मुख्य इंजीनियर/नि/नॉर्थ-लखीमपुर रंगिया का दिनांक 09.06.2016 को उप मुख्य इंजीनियर/नि/सर्वे/ के पद पर स्थानांतरण हुआ।

श्री अमन पुस्कर, उप मुख्य इंजीनियर/नि समन्वय/मालीगांव का दिनांक 11-05.2016 को उप मुख्य इंजीनियर/नि सामान्य -1 के पद पर स्थानांतरण हुआ।

श्री के. सिंगसन उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर/नि/मुख्यालय/मालीगांव का दिनांक 11.05.2016 को श्री सुनील मित्तल डीजीएम (जी) मालीगांव के स्थान पर पदस्थापन हुआ।

श्री मसूद आलम का दिनांक 11.05.2016 को उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर/नि/मुख्यालय/मालीगांव में श्री के. सिंगसन के स्थान पर पदस्थापन हुआ।

श्री बी.एल. सोलंकी (एसएजी/आईआरएसईई) मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर/नि-।। का दिनांक 05.05.2016 को पू.सी.रेल/निर्माण संगठन से पश्चिम रेलवे में स्थानांतरण हुआ।

श्री जीत सिंह, सीएसई मालीगांव का दिनांक 11.05.2016 को स्थानांतरण हुआ तथा मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर/नि-।। के स्थान पर पदस्थापन हुआ।

श्री एस. वर्मा, ओएसडी/नि/एनडीएलएस का दिनांक 13/06/2016 को श्री राम समुज, उप मुख्य इंजीनियर/नि मालदा के स्थान पर पदस्थापन हुआ।

सर्वेक्षण

क्रम सं.	सर्वेक्षण	स्वीकृति वर्ष	राज्य	प्रगति
1.	सायरंग से बिछुआ (266 कि.मी.)	2013-14	मिजोरम	98 %
2.	बेलोनिया से चिटागंग (125 कि.मी.)	2012-13	त्रिपुरा (भारत) चिटागंग (बंग्लादेश)	20 %
3.	धुबड़ी से मैंदीपथार (120 कि.मी.)	2015-16	असम-मेघालय	15 %
4.	मिसामारी (भालुकपोंग)-टेंगा-टवांग (378 कि.मी.)	2014-15	अरूणाचल प्रदेश	5 %
5.	नार्थ लखीमपुर-बामे-सिलापथार (249 कि.मी.)	2014-15	अरूणाचल प्रदेश	8 %
6.	पासीघाट-तेजु-रूपोइ (227 कि.मी.)	2014-15	असम तथा अरूणाचल प्रदेश	15 %
7.	मार्घेरिटा (असम) से डेउमाली (अरूणाचल प्रदेश) (31 कि.मी.)	2016-17	असम तथा अरूणाचल प्रदेश	-
8.	लेखापानी (असम) से खरशेंग (अरूणाचल प्रदेश) (25 कि.मी.)	2016-17	असम तथा अरूणाचल प्रदेश	-
9.	मैराबाड़ी से जागिरोड (50 कि.मी.)	2016-17	असम	-
10.	लमडिंग एवं डिब्रगड़ (343 कि.मी.)	2016-17	असम	5 %
11.	राधिकापुर एवं बारसोई (25 कि.मी.)	2016-17	पश्चिम बंगाल	5 %

वर्ष 2016-2017 के लिए निर्धारित लक्ष्य (परियोजनाएं) (चालू किए गए):

योजनाशीर्ष	सेक्शन का नाम	कुल लक्ष्य/ लंबाई (कि.मी.)	मार्च, 16 तक पूरी की गई लंबाई(कि.मी.)	वित्त वर्ष 2016-17 में संचयी प्रगति	अभ्युक्तियां
एनएल	जिरिबाम-इंफाल परियोजना का जिरिबाम-धोलाखाल	12.50	0	0	
	कुल नई लाइन	12.50	0	0	
जीसी	(i) लमडिंग-सिलचर एवं फिंगर लाइन परियोजना का करीमगंज-मैशासन	10.00	0	0	
	(ii) लमडिंग-सिलचर एवं फिंगर लाइन परियोजना का बराईग्राम-दुल्लबछेरा एवं बाईपास	32.90	0	0	
	कुल आमान परिवर्तन	42.90	0	0	
डीएल	(i) न्यू कूचबिहार-गुमानीहाट परियोजना का गुमानीहाट-घोकसाडंगा	7.07	0	0	
	(ii) न्यू कूचबिहार-सामुकतला रोड परियोजना का न्यू अलीपुरद्वार-सामुकतला रोड	10.55	0	10.55	पूरा किया गया एवं चालू किया गया ।
	कुल दोहरीकरण	17.62	0	10.55	
	कुल (एनएल+जीसी+डीएल)	73.02	0	10.55	

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण संगठन) की (अप्रैल-जून 2016) तिमाही के लिए आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 25.07.2016 को श्री ए.एस.गरुड़, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी-1/नि. की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का शुभारंभ मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण) ने अध्यक्ष महोदय एवं रेलवे बोर्ड द्वारा नामित राजभाषा प्रेक्षक सदस्य श्री पद्माकर पाण्डेय जी, श्री शंकर गिरि जी एवं डॉ. देवेन चन्द्र दास " सुदामा" जी का विशेष रुप से आभार प्रकट किया। मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने बताया कि पिछली बैठक के दौरान लिए गए निर्णयों पर हम अमल कर रहे हैं। तिमाही के दौरान मुख्यालय के अंतर्गत विभिन्न कार्यालयों में क्रमशः राजभाषा अधिनियम धारा 3 (3), मूल पत्राचार, हिंदी डिक्टेशन तथा हिंदी टिप्पण एवं नोटिंग में आशा अनुरूप उपलब्धि प्राप्त कर ली गई है। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी में शत-प्रतिशत कामकाज करने के लिए विनिर्दिष्ट अनुभागों में भी शत-प्रतिशत (100%) काम हिंदी में किया जा रहा है। तत्पश्चात श्री अमन पुष्कर, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि ने प्रतिवेदन "पॉवर प्वाईंट" पर प्रस्तुत किया। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/नि ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन करते हुए कहा कि बैठक निश्चित समय-सीमा के अंतराल पर आयोजित की जा रही है तथा यह बैठक तिमाही के दौरान हिंदी के प्रसार-प्रचार के बारे में आने वाली कठिनाईयों और उन्हें दूर करने के उपायों की समीक्षा करने का मौका प्रदान करती है और नियमित रूप से चर्चा के द्वारा अधिकारियों और कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने में एक नई स्फूर्ति आएगी।

सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों का विदाई समारोह

अप्रैल 2016 APR 2016

मई 2016 MAY 2016

जून 2016 JUN 2016

निर्माण संगठन में अप्रैल, मई तथा जून, 2016 में सेवानिवृत्त हुए निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विदाई समारोह आयोजित किए गए। इन अधिकारियों/कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्त भुगतान संबंधी विवरण तथा स्वर्ण जड़ित चांदी के पदक प्रदान किए गए। निर्माण संगठन इन अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके सुखद सेवानिवृत्त जीवन व पारिवारिक समृद्धि की कामना करता है।

क्रमांक	नाम	पदनाम	कार्यालय	सेवानिवृत्त माह
1	श्री एन.सी. तालुकदार	उप. मुख्य इंजी/नि/एस	महाप्रबंधक/नि/मालीगांव	अप्रैल, 16
2	श्री टी.सी. दास	काधी/नि.	सीईई/नि/मालीगांव	अप्रैल, 16
3	श्री डी.पी. थापा	वाहन चालक/नि.	उ.मु.इंजी./नि/मालीगांव	अप्रैल, 16
4	श्री एम. के.चक्रवर्ती	एस ई/आईटी/नि.	वि.स.एवं मुलेधि/नि/मालीगांव	मई, 16
5	श्री आर. के.साहा	सीनियर ट्रेकमैन	उ.मु.इंजी./नि/एनजेपी	मई, 16
6	श्री नृपेन काकति	चपरासी/नि.	उ.मु.इंजी./नि/जोगीघोपा	मई, 16
7	श्री सिवामय नंदी	सकांजी/नि/इम्फाल	उ.मु.इंजी./नि/ इम्फाल	जून, 16
8	श्री रोहित चंद्र लारा	व.स.वित्त सलाकार/नि.	वि.स.एवं मुलेधि/नि/मालीगांव	जून, 16
9	श्री इस्लामुद्दीन मजुमदार	वाहन चालक/नि.	उ.मुंजी/नि/लामडिंग/2	जून, 16
10	श्री घन कांत दास	एफसीडी/नि.	डीईई/नि/डिब्रूगढ़	जून, 16
11	श्री कपिलदेव राम	हेल्पर/नि/1	उ.मु. सिएवंदूसंइंजी/नि/मालीगांव	जून, 16
12	श्री सिकंदर	ट्रेकमैन	उ.मु.इंजी./नि/कटिहार	जून, 16

शब्द ज्ञान

Pay-slip - वेतन पर्ची
Penalty - दंड
Qualify - अर्हता प्राप्त करना
Quality - गुण, विशेषता
Rate list - दर सूची

उज्जयन्त महल की रात के दृश्य।

श्रीश्री जगन्नाथ महाप्रभु के रथ यात्रा दर्शन और कलयुग के एकमात्र पूर्ण दारू ब्रह्म के नव कलेवर

श्रीश्री महाप्रभु जगन्नाथ धाम पुरी में 5 जुलाई से 7 जुलाई तक एक अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन और बहु भाषिक काव्य गोष्ठी 'विश्वमुक्ति', भुवनेश्वर द्वारा आयोजन किया गया था। पूर्वोत्तर सीमा रेल तथा निर्माण संगठन की ओर से उक्त सम्मेलन में भाग लेने के लिए रेलवे बोर्ड ने मुझे नामित किया। उसी समय 6 जुलाई में पुरी में श्रीश्री महाप्रभु जगन्नाथ रथ यात्रा होने के कारण मैंने यह सुविधा खोना नहीं चाहा। रथ यात्रा के दौरान मुझे कभी भी भगवान महाप्रभु को रथ के ऊपर देखने को मिलेगा यह मेरा कल्पनातीत था। ऐसा, शायद यह महाप्रभु की ही कृपा है।

6 जुलाई को विश्वमुक्ति की ओर से सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी सदस्यों को रथयात्रा का दर्शन कराया गया। समय पर रथ यात्रा के उस पवित्र स्थल पर उपस्थित हुए। सिर्फ और सिर्फ लोग और भयंकर गर्मी, मानो लोकार्ण्य के सिवा और कुछ भी नहीं। हर जगह भीड़ और भीड़। सरकार की ओर से पानी छिड़काने की व्यवस्था की जा रही थी उससे क्षणिक समय के लिए सुकुन मिला था। उस भीड़ में अपने को खो जाने का भी डर था। फिर भी मन में जोश लिए भीड़ को चीरते हुए करीब दो घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद जब महा-प्रभु जगन्नाथ की रस्सी छूने को मिला तब भक्ति भाव से मेरा अन्तर्मन गद्-गद् हो गया। मन में अपने को विजय प्राप्त करने सा महसूस हुआ, मन को बहुत सुकून मिला, मानो मेरा जीवन कुछ हद तक सफल हो गया। वहां से हमने महाप्रभु के बारे में जत् किंचित तत्व प्राप्त की, जो नीचे सारांश के रूप में है।

स्कन्द पुराण में महाप्रभु जगन्नाथ : महा भागवतगीता के 15 वें अध्याय में महाप्रभु जगन्नाथ को संसार के स्वामी के रूप में माना गया है। वाल्मिकी रामायण के उत्तराखण्ड में श्री राम विभीषण को जगन्नाथ जी की पूजा करने की सलाह देते हैं। बताया जाता है कि सत्य युग में इन्द्रद्युम्न

नामक एक श्रेष्ठ राजा था। उनका जन्म सूर्य वंश में हुआ था। वह ब्रह्मा जी के पांच पीढ़ी के नीचे था। वे सत्यवादी, सदाचारी, शुद्ध और सात्विक राजा थे। प्रजा को अपनी सन्तान समझ कर वह सदा न्यायपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे।

एकदिन राजा ने अपने पुरोहित से कहा- आप उस क्षेत्र का पता लगाइए,जहाँ महाप्रभु जगन्नाथ के साथ साक्षात दर्शन कर सकें। उसी समय एक व्यक्ति आया और अपने आप यह बताया कि भारत वर्ष में उड्र नाम का एक प्रसिद्ध देश है। उस देश में दक्षिण समुद्र किनारे पुरूषोत्तम क्षेत्र है,जहाँ नीलांचल पर्वत है। वह प्रदेश चारों ओर सेवनों से घिरा है। उसके बीच में एक कल्पवृक्ष है,जिसके पश्चिम में रोहिणी नामक एक कुण्ड है। उसके जल को स्पर्श करने से ही मोक्ष मिल जाता है। उसके पूर्वो तट पर इन्द्रनीलमणि की बनी हुई भगवान वासुदेव की प्रतिमा है,जो साक्षात मोक्ष प्रदान करने वाली है। उस कुण्ड में स्नान करके जो महाप्रभु पूर्व जगन्नाथ जी की दर्शन करता है,वह मोक्ष पाता है। वहाँ शबरद्वीप नाम का एक आश्रम है। उस आश्रम से एक रास्ता उनके मन्दिर तक जाता है। वहाँ महाप्रभु जगन्नाथ जी शंख, चक्र,गदा, पद्म धारी साक्षात विराजमान है। यह कह कर वह व्यक्ति अन्तर्ध्यान हो गया।

पुरोहित ने सलाह दिया कि हम सब चलकर वहीं बस जाएँ, मानव जीवन की सफलता इससे बड़ी और क्या हो सकती है? राजा इन्द्रद्युम्न ने पुरोहित की बात मान ली । पुरोहित का छोटा भाई विद्यापति सहित सभी समस्त विश्वसनीय पुरुषों को लेकर उड्र देश (उड़ीसा) को चल दिया। महानदी को पार वह एकाम्र वन पंहुचा । महाप्रभु जगन्नाथ की खोज करते हुए वह नीलांचल जा पंहुचा । वहाँ से आगे कोई रास्ता नहीं था। तभी उसे अलौकिक वाणी सुनाई पड़ी। उस आवाज को सुन कर वह पीछे-पीछे चल दिया। कुछ दूर पर उसे शवरद्वीप आश्रम मिला । वहाँ भक्तों को उसने प्रणाम किया। ठीक उसी समय उस आश्रम का पुजारी विश्ववासु अपनी पूजा समाप्त करके वहाँ आया। यह देख कर ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपना परिचय देते हुए बताया कि वह वहाँ नीलमाधव के दर्शन के लिए आया है। उसने भी बताया कि जब तक वह अवन्ती के राजा इन्द्रद्युम्न को नीलमाधव के बारे में नहीं बता सकेंगे तब तक वह निराहार ही रहेगा । इस तरह उस ब्राह्मण ने नीलमाधव को देखने की इच्छा प्रकट की। विश्ववासु ने पहले तो उस स्थान के बारे में बताने से मना कर दिया। विद्यापति नामक उस ब्राह्मण ने देखा कि विश्ववासु की ललिता नामक एक रूपवती कन्या है। उसके पास वह गया और सीधे उससे विवाह करने का प्रस्ताव रख दिया। कालान्तर में ललिता और विद्यापति का विवाह हो गया और वे दोनों सूखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे।

एक दिन विद्यापति ने ललिता से कहा कि वह अपने पिता से पूछे कि नीलमाधव के पूजास्थल तक वह कैसे जा सकता है। उसने ललिता को यह भी चेतावनी दी कि उसकी बात अगर वह नहीं मानेगी तो वह उसे छोड़कर चला जाएगा।

पिताजी के आने पर उदास ललिता ने सारी बातें बताई। विश्ववासु अब तो लाचार हो गया था। वह एक शर्त पर नीलमाधव के दर्शन कराने को तैयार हो गया। उसने कहा कि वहां जाते और आते समय विद्यापति की आँखों पर पट्टी बंधी रहेगी।वह जैसे ही नीलमाधव के दर्शन करेगा, पुन: उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी जाएगी। हुआ ऐसा ही,लेकिन ललिता ने अपने पति के गमछे के दोनों छोरों पर सरसों बाँध दी,जो आते-जाते समय गिरती रही। विद्यापति नीलमाधव के दर्शन कर लौट आया। कुछ दिनों बाद सरसों के बीज से अंकुर निकले और बड़े होकर पीले फूलों की पगडंडी स्पष्ट दिखाई देने लगी। विद्यापति अब स्वयं रास्ता पहचान कर अकेले निकला और नीलमाधव के दर्शन कर उस स्थल का पता पाने में सफल हो गया। वह लौटकर अवन्ती आया (3) और राजा को सारी बातें सुनाई। राजा इन्द्रद्युम्न उनके साथ नीलांचल आए। जब वे उस स्थान तक पहुँचे, तब तक गोपनीयता नष्ट होते ही नीलमाधव अन्तर्ध्यान हो चुके थे। राजा को केवल निराशा ही हाथ लगी।

एक रात राजा को एक दिव्यवाणी सुनाई दी कि समुद्र तट पर उन्हें एक पवित्र दारू लट्ठा अर्थात जगन्नाथ संस्कृति में पवित्र नीम लकड़ी तैरता मिलेगा। उसकी देव प्रतिमा बनाकर वह उन्हें प्रतिष्ठित करें। कहा जाता है कि राजा इन्द्रद्युम्न ने जल में तैरते हुए उस काष्ठ को लाकर बलभद्र, सुभद्रा, जगन्नाथ एवं सुदर्शनजी चतुर्धा देव विग्रहों को बनवाने के लिए 'विचित्र' नामक बढ़ई से कहा। बढ़ई ने राजा इन्द्रद्युम्न की पत्नी रानी गुण्डीचा से आग्रह किया कि वह एक शर्त पर देव विग्रहों को बनाएगा। वह है कि एक महीना तक बन्द कमरे के अन्दर मूर्ति की तैयारियां होगी। उस दौरान कोई उसे भूल से भी न देखें। बढ़ई ने काम शुरू किया। इस तरह 10 दिन बीत जाने के बाद बूढ़े बढ़ई की ओर से विग्रह तैयार करने का कोई आवाज नही सुनाई देने लगे। ऐसे में रानी गुण्डीचा ने सोचा, बढ़ई शायद अन्दर मर गए होंगे। डर कर रानी ने कई दिनों के बाद दरवाजा का किवाड़ खोलने का आदेश दिया। जैसे ही किवाड़ खोला,बढ़ई वहां से अन्तर्ध्यान हो गया। तब से भगवान बलभद्रजी, सुभद्राजी, जगन्नाथ जी तथा सुदर्शन के चतुर्धा देव विग्रहों की मूर्ति इस तरह असंपूर्ण सा दिखाई देते हैं। इसके बाद राजा इन्द्रद्युम्न ने इन्द्रलोक जाकर ब्रह्माजी को साथ लाकर उन विग्रहों में प्राण प्रतिष्ठा करवाई। आज भी श्री मन्दिर प्रांगण का कल्पवट आदि इस पौराणिक कथा को सत्य रूप प्रदान करते हैं।

<u>दारू का नवकलेवर:</u> ऋगवेद में दारू विग्रहों का उल्लेख है, जिसमें प्रति दो मल्ल मास यानि जब दो आषाढ़ पड़ता है उस साल पुरी धाम के श्रीमंदिर के रत्नसिंहासन पर विराजमान चतुर्धा देव विगहों का नवकलेवर होता है। पुराने दारू देव विग्रहों को हटाकर नये दारू से निर्मित देव विग्रहों को रत्नसिंहासन पर विराजमान कराया जाता है जिसमें पुराने दारू देव विग्रहों से मात्र उनके ब्रह्मतत्व को निकालकर नये दारू देव विग्रहों में गोपनीय विधि से डाल दिया जाता है उसे ही नव कलेवर कहते हैं।

मुनमुन शर्मा
राजभाषा अधिकारी/नि